P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking An Analisation
Title Code:UPBIL04788
Vol-I* Issue-VI*July-2016

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन का अध्ययन

मधु कंवर सोनी
व्याख्याता,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
विद्याआश्रम टी.टी. कॉलेज,
जोधपुर

जगदीश बाबल
व्याख्याता,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
विद्याआश्रम टी.टी. कॉलेज,
जोधपुर

सारांश

शिक्षा बालक के भविष्य को उज्जवल बनाने के लिये एक उज्जवल प्रकाश किरण की तरह है। बालक के जीवन में प्रथम पाठशाला उसका परिवार है जहाँ उसमें संस्कारों का निर्माण होता है , दूसरी पाठशाला वह है जहाँ शिक्षा प्राप्त कर जीवन में उच्चता प्राप्त करता है। विद्यालयी शिक्षा विद्यार्थी बाल्याकाल से किशोरावस्था तक ग्रहण करता है। रॉस का कथन है कि – इस अवस्था में किशोर अत्यंत संवेगात्मक जीवन व्यतीत करता है। यद्यपि इस अवस्था में किशोरों में काफी मानसिक विकास हो जाता है किन्तु फिर भी संवेगों के प्रभाव उनके व्यवहार में देखे जा सकते है। यदि सुखात्मक संवेग होते है तो किशोरों में शक्ति का स्त्रोत फूट पड़ता है और यदि दुखात्मक संवेग जैसे क्रोध, चिन्ता, वैमनस्य, भय और वंचना आदि का अनुभव करता है तो उसके कार्य निरूद्देश्य तथा जल्दबाजी में होंगे। इस अवस्था में अत्यधिक शारीरिक व मानसिक संवेगात्मक से सामाजिक संतुलन बिगड़ने लगता है। बालक के व्यक्तित्व में उसके संवेग उसके जीवन में क्या स्थान रखते है तथा क्या ये व्यक्तित्व के दूसरे शीलगुणों तथा समायोजन को प्रभावित करते है अथवा नहीं ? ये पक्ष अध्ययन की आवश्यकता को महसूस करता है।

मुख्य शब्द : संवेगात्मक बुद्धि ,समायोजन –छात्र एवं छात्राएं

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में रहकर ही संतुष्ट रूप से अपना जीवन व्यतीत कर सकता है। जिस प्रकार मनुष्य के जीवन की मूलभूत आवश्यकताएँ रोटी, कपड़ा और मकान आवश्यक है। उसी प्रकार उसकी सफलतम जीवन की चौथी आवश्यकता – शिक्षा है। शिक्षा जो मानव को सभ्य बनाती है और समायोजित व्यवहार कराना सिखाती है।

"शिक्षा ही संसार की वह शक्ति है जिसकी सहायता से मनुष्य निम्न धरातल से उठकर उच्चासन प्राप्त कर सकता है। "

– पं. श्री राम शर्मा आचार्य जी

शिक्षा बालक के भविष्य को उज्जवल बनाने के लिये एक उज्जवल प्रकाश किरण की तरह है।

बालक के जीवन में प्रथम पाठशाला उसका परिवार है जहाँ उसमें संस्कारों का निर्माण होता है दूसरी पाठशाला वह जहाँ शिक्षा प्राप्त कर जीवन में उच्चता प्राप्त करता है। विद्यालय वह संस्था है जहाँ बालक के व्यक्तित्व के समस्त पक्षों का विकास संभव है अर्थात् उसके व्यवहार को संशोधित करने एवं उसके द्वारा अपेक्षित व्यवहार की पूर्ति करना ही शिक्षा का उद्देश्य है।

विद्यालयी शिक्षा विद्यार्थी बाल्यकाल से किशोरावस्था तक ग्रहण करता है। किशोरावस्था मानव जीवन की एक महत्वपूर्ण अवस्था है क्योंकि यह बाल्यकाल और युवावस्था के बीच का समय होता है। शरीर में सबसे अधिक बदलाव इसी अवस्था में होता है। माध्यमिक स्तर का विद्यार्थी जो कि 13 वर्ष से 16 वर्ष की उम्र के बीच में होते है वे किशोरावस्था से गुजर रहे होते है।

रॉस का कथन है कि इस अवस्था में किशोर अत्यंत संवेगात्मक जीवन व्यतीत करता है। यद्यपि इस अवस्था में किशोरों में काफी मानसिक विकास हो जाता है किन्तु फिर भी संवेगों के प्रभाव उनके व्यवहार पर देखे जा सकते है। यदि सुखात्मक संवेग होते है तो किशोरों में शक्ति का स्त्रोत फूट पड़ता है और यदि दुखात्मक संवेग जैसे क्रोध, चिन्ता, वैमनस्य, भय और वंचना आदि का अनुभव करता है तो उसके कार्य निरूद्देश्य तथा जल्दबाजी में होंगे। इस अवस्था में अत्यधिक शारीरिक व मानसिक संवेगात्मक तथा बसामाजिक संतुलन बिगड़ने लगता है। अतः अनेक समायोजन संबंधी समस्याएँ भी उत्पन्न हो जाती है। व्यक्ति की लम्बाई, भार एवं अन्य शारीरिक अंगों में तीव्र परिवर्तन होते है इन परिवर्तनों के कारण किशोर बैचेन तथा असमायोजित का अनुभव करने लगता है। अतः स्त्रावी ग्रंथियों की असामान्य क्रियाशीलता एवं सामाजिक अनुभव के कारण किशोर भावात्मक रूप से

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking An Analisation
Title Code:UPBIL04788
Vol-I* Issue-VI*July-2016

संतुलित नहीं रह पाते है, वह अपने आप को अपने परिवार, समाज, विद्यालय मित्रों तथा सहपाठियों में असुरक्षित तथा असमायोजित महसूस करता है। इस अवस्था में किशोरों के संवेग अत्यंत सशक्त होते है। यदि किशोर किसी वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति से घृणा करता है तो अत्यधिक घृणा करता है और यदि प्रेम करता है तो अत्यधिक प्रेम करता है। इस अवस्था में संवेग अनियंत्रित होते है तथा उनमें अनियमित रूप से उतार–चढ़ाव आते रहते है। किसी क्षण किशोर अत्यधिक प्रसन्न हो सकता है तथा तत्काल उसके मन में आत्महत्या का विचार भी आ सकता है।

इसी कारण किशोरावस्था के विषय में स्टनले हॉल ने कहा है कि – " यह अवस्था संघर्ष व तूफान का काल है। "जो किसी भी कार्य को करने के लिये संवेगों का होना जरूरी है। आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक समाज में जहाँ माता–पिता व शिक्षकों को अपने छात्रों से उच्च अपेक्षाएँ है उनकी अपेक्षाओं पर खरे उतरने के लिये सही दिशा की ओर प्रयास की आवश्यकता है। हमारे संवेग हमारे व्यवहार को दिशा प्रदान करते है इसलिये संवेगों का व्यक्ति की क्रियाओं व उसकी सफलता में बहुत बड़ा योगदान रहता है।

जॉन मेयर पीटर सलोवे व डेनियल गोलमेन ने इन संवेगों को आधार बनाकर व्यक्ति की सफलता के लिये संवेगात्मक बुद्धि को अधिक महत्त्वपूर्ण बताया है।

संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति की वह क्षमता है जो उसे अपनी एवं दूसरों की भावनाओं को पहचानने में मदद करती है , अभिप्रेरित करती है व अपने व्यवहार एवं संबंधों में भावनाओं को व्यवस्थित करती है।

संवेगात्मक बुद्धि , शैक्षिक बुद्धि से पूर्णतया भिन्न होती है परन्तु शैक्षिक बुद्धि के सहयोगी का कार्य करती है।अतः अर्जित अनुभवों द्वारा विभिन्न वातावरण के साथ अनुकूलन करने की क्षमता का विकास करना ही शिक्षा है। शिक्षा एक सौद्देश्यपूर्ण व गतिशील प्रक्रिया है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास कर बाहय वातावरण के साथ उसके समायोजन में सहायक होती है। अतः विद्यालयों में शिक्षा की व्यवस्था इस प्रकार हो कि बालक की बुद्धि अथवा मानसिकता के सभी पक्षों का संतुलित विकास हो सके।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् शिक्षा के विस्तार के साथ उसकी व्यापकता भी बढ़ी है। कभी शिक्षा का वर्ग चयनित था, शिक्षा के एक अंश में ही शिक्षा का प्रसार होता था । अब इसका स्थान जब शिक्षा ने पूर्णरूपेण लिया है तो शिक्षा के इस व्यापारीकरण से शिक्षा में विरलीकरण आया। शहरों में शिक्षा का व्यावसायीकरण होने लगा। धन संपन्न लोगों के आकषर्ण हेतु शहरों में सुविधा संपन्न शालाएँ बढ़ने लगी परिणामस्वरूप अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों की वृद्धि होने लगी जिनमें उँचे शुल्क देकर धनाढ्य लोगों के बच्चे पढ़ने लगे , दूसरी ओर गाँवों में पढ़ने वाले बालकों के लिये अभावग्रस्त शालाएँ एवं उच्च शुल्क न दे पाने के कारण हिन्दी माध्यम के अलावा और कोई विकल्प नहीं रहा। अवसरों का असंतुलन बड़ा हो गया। अब प्रश्न यह उठता है कि जो प्रतिभावान है शिक्षा में अभिरूचि रखते है किन्तु गरीब है, साधनहीन है, गाँव में रहते है, उनके के पास उच्च शिक्षण शुल्क नहीं हैं उन्हें शिक्षा का उचित अवसर कैसे दिया जाये। प्रतिभाशाली बालक प्रत्येक जाति वर्ग क्षेत्र एवं माध्यम में होते है। अब तक अच्छी शिक्षा केवल अमीर वर्ग के उच्च सुविधा संपन्न अंग्रेजी माध्यम के बालकों को ही उपलब्ध होती थी। गरीब व पिछड़े बालक इससे वंचित रहे। इस प्रकार यदि गाँव में बसने वाले प्रतिभावान छात्रों को पढ़ाई से वंचित रखा गया तो क्या हम देश को प्रगति के पथ पर आगे ले जाने में समर्थ हो सकेंगे ?

देश जाति व राष्ट्र अपने सदस्यों में निहित प्रतिभाओं का समूचित रूप से विकास कर जितना अधिक उपयोग करते है उतना ही अधिक उन्नत समूह व सुदृढ़ होते है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जिसमें प्रतिभावान बालकों को शिक्षा के अवसरों की समानता प्रदान की जाए तथा शिक्षा का प्रयोग अधिकाधिक सभ्य व प्रतिभाओं का विकास करने और राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान करने के लिये कार्य किया जाए।

इस पृष्ठभूमि में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अंतर्गत विभिन्न स्तरों पर शिक्षा का पुर्नगठन किया गया है इसी के अनुसार जिन बालकों में विशेष प्रतिभा या अभिरूचि है उन्हें अच्छी शिक्षा उपलब्ध कराकर अधिक तेजी से आगे बढ़ने के अवसर देने चाहिये।

संवेगात्मक बुद्धि

संवेगात्मक बुद्धि सामाजिक बुद्धि का ही रूप है। सर्वप्रथम थार्नडाइक ने सन् 1920 में सामाजिक बुद्धि का संप्रत्यय दिया। थॉर्नडाइक के अनुसार सामाजिक बुद्धि स्त्री–पुरूष तथा बालक– बालिका के मानव संबंधों समझने और उसके अनुसार व्यवहार करने का सामर्थ्य है।

सन् 1983 में हावर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर गार्डनर ने अपने बहु बुद्धि सिद्धान्त में सामाजिक बुद्धि में अन्त एवं अन्तः वैयक्तिक बुद्धि को शामिल किया। अन्तः व्यैक्तिक बुद्धि को ही संवेगात्मक बुद्धि के नाम से जाना जाता है।

सॉल्व एवं मेयर के अनुसार – "संवेगाात्मक बुद्धि गार्डनर की अन्तः वैयक्तिक बुद्धि का ही रूप है जिसमें निम्न शाखाएँ सम्मिलित होती है" –

1. आत्म जागरूकता
2. भावनाओं का प्रबंधन
3. अभिप्रेरणा
4. सहानुभूति
5. संबंधों से निपटना

सॉल्वे व मेयर ने सन् 1990 में यह निष्कर्ष दिया कि संवेगात्मक बुद्धि का प्रयोग समस्या समाधान में किया जा सकता है। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सकारात्मक बुद्धि भविष्य की योजनाओं के निर्धारण को सही दिशा प्रदान करती है। अच्छी बुद्धि रचनात्मक एवं सृजनात्मक सोच के लिये लाभदायक होती है साथ ही यह व्यक्तिगत सिद्धान्तों को भी निर्धारित करती है।

सन् 2003 में पिटर सोल्वे व डेविड पिजारो ने यह निष्कर्ष दिया –कि संवेगात्मक बुद्धि दो प्रकार से लाभप्रद होती है–

1. यह किसी भी क्षेत्र में अनुसंधान के लिये एक विस्तृतपकीप व नियोजित कार्यक्रम की रूपरेखा प्रदान करती है।
2. संवेगात्मक बुद्धि सशक्त अन्तः व्यैक्तिक अवधान व सकारात्मक रूप से कार्य करने की क्षमता व उपलब्धि में अभिवृद्धि करती है।

संवेगात्मक बुद्धि स्वंय व दूसरों की भावनाओं का विश्लेषण करने, उनकी इच्छाओं को समझने व अन्तिम रूप से उनके व्यवहार करने में योग्यता प्रदान करती है।

सन् 1997 में सॉल्वे व मेयर ने अपनी परिभाषा को इस रूप में दिया – संवेगात्मक बुद्धि सूचनाओं की सतत् प्रक्रिया है। जो मुख्य रूप से भावनाओं के अर्थ व उनके संबंध को समझने की प्रक्रिया व इसके आधार पर समस्या समाधान की क्षमता है।

मेयर व कोब ने संवेगात्मक बुद्धि को चार शाखाओं के रूप में परिभाषित किया है–

1. संवेगात्मक पहचान बोध व उनकी अभिव्यक्ति
2. विचारों की संवेगात्मकता सुगमता
3. संवेगात्मक समझ
4. संवेगात्मक प्रबंध

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking An Analisation
Title Code:UPBIL04788
Vol-I* Issue-VI*July-2016

अतः यह कहा जा सकता है कि संवेगात्मक बुद्धि में समाज व आस पास के वातावरण में सामंझस्य स्थापित करने की क्षमता विकसित करती है।

समायोजन

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती है। ये व्यक्ति के बाह्य और आंतरिक वातावरण के कारण होती है। इन समस्याओं का समाधान व्यक्ति के विकास व प्रगति के लिये आवश्यक है। यदि इन समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो व्यक्ति के व्यक्तित्व में संतुलन नहीं रह पायेगा। परिणामस्वरूप विभिन्न प्रकार की कुण्ठायें, तनाव, द्वन्द्व आदि उत्पन्न होने लगेंगे इन सबसे बचने के लिये व्यक्ति को कुछ विशेष प्रयास करने पड़ते है इन प्रयासों या प्रयत्नों को ही समायोजन कहा जाता है।

समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा एक व्यक्ति अथवा समूह अपने भौतिक अथवा सामाजिक पर्यावरण के साथ सामंझस्यपूर्ण स्वस्थ परिस्थितियों के अनुकूल हो जाना ही समायोजन कहलाता है। यह समायोजन व्यक्ति अपनी योग्यता के अनुसार करता है।

समायोजन प्रक्रिया में व्यक्ति तथा वातावरण दोनों ही प्रभावित होते है। व्यक्ति समायोजन करने के लिये बाह्य वातावरण के साथ निरन्तर अन्तःक्रिया करने लगता है। समायोजन करने के लिये कई बार वह अपने आप को बदलता है और कई बार वह वातावरण को बदलने का कार्य करता है। कई बार व्यक्ति समायोजन की प्रक्रिया में स्वंय व वातावरण दोनों को परिवर्तित करता है।

समस्या का औचित्य

बालक के व्यक्तित्व में उसके संवेग उसके जीवन में क्या स्थान रखते है तथा क्या ये व्यक्तित्व के दूसरे शीलगुणों को प्रभावित करते है अथवा नहीं । इस पक्ष ने अध्ययन की आवश्यकता को महसूस किया है।

समस्या अभिकथन

'प्रस्तुत शोध का समस्या कथन इस प्रकार है– ' उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन का अध्ययन "

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये –

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ निर्मित की गई –

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

न्यादर्श

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत 50 छात्र एवं 50 छात्राओं को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया ।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त विधि

प्रस्तुत अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्त संकलन हेतु निम्न प्रमापीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया–

1. डॉ. एस. के. मंगल एवं श्रीमति शुभ्रा मंगल – ईमोश्नल इंटेलीजेंस इन्वेन्ट्री
2. प्रो. ए. के. पी. सिन्हा एवं प्रो. आर. पी. सिंह – ए.आई.एस.एस.

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण विभिन्न सांख्यिकी तकनीक मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी परीक्षण द्वारा किया गया।

समस्या का परिसीमन

प्रस्तुत अध्ययन में जोधपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र तिंवरी के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं को ही सम्मिलित किया गया।

अध्ययन विधि

सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

1. मानहास के. डी. जाखड़, एस. सी. (2005) – इन्होंने अपने शोध कार्य में संज्ञा नायक चरों अर्थात् बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि और भाव प्रबल बुद्धि के मध्य सार्थक एवं धनात्मक सह संबंध पाया।
2. शर्मा राधा आर (2006) ने व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में संवेगात्मक बुद्धि का कार्य क्षमता के साथ संबंध विषय पर शोध कार्य किया तथा संवेगात्मक बुद्धि के विकास के लिये एक कार्य योजना तैयार की।
   संवेगात्मक बुद्धि उच्च स्तर पर कार्य क्षमता में वृद्धि करती है। निम्न क्षमता वाले कार्मिकों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर भी निम्न पाया गया। संवेगात्मक विकास के साथ कार्य क्षमता में वृद्धि संभव है।
3. पहाड़िया के. एल. (2006–7) मादक पदार्थों का सेवन करने वाले तथा नहीं करने वाले परिवार के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन तथा पारिवारिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि मादक पदार्थों का सेवन नहीं करने वाले परिवार के किशोरों का समायोजन सामान्य परिवार के किशोरों की तुलना में कम पाया गया। मादक पदार्थों का सेवन करने वाले परिवार के किशोंरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य संबंध नहीं पाया गया।
4. पाठक माया (2009–10) बालक अभिभावक संबंधों का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जिसमें पाया कि बालक अभिभावक मैत्री संबंध बालक के शैक्षिक समायोजन सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन को प्रगाढ़ बनाता है।
5. रोज बलवीर सिंह (2002) – किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि समायोजन दुश्चिंता का उनके समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन में पाया गया कि विद्यालयों की व्यवस्थात्मक भिन्नता का समायोजन से घनिष्ठ संबंध है जबकि व्यवस्थात्मक भिन्नता का दुश्चिंता से सार्थक संबंध नहीं पाया गया , साथ ही लिंगभेद का किशोरों के समायोजन व दुश्चिंता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
6. खिमनानी प्रिया (2007) – बी.एड. छात्राध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि व्यक्तित्व शीलगुण एवं पीटीईटी के अंकों शिक्षण प्रभावशीलता से संबंध का अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking An Analisation
Title Code:UPBIL04788
Vol-I* Issue-VI*July-2016

गया कि व्यक्तित्व, शीलगुणों व शिक्षण प्रभावशीलता में धनात्मक सह संबंध होता है। पीटीईटी के अंकों का शिक्षण प्रभावशीलता में धनात्मक सह संबंध होता है।

7. शेखावत नीरू (2009) – आर्मी एवं सिविल स्कूल के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि व आत्मानुभूति का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि आर्मी स्कूल के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि औसत स्तर को दर्शाता है। सिविल स्कूल के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान 64.16 है इन विद्यार्थियों में भी संवेगात्मक बुद्धि औसत स्तर की है। इन विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं विद्यालय परिवेश को भिन्नता के उपरान्त भी संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में कोई विशिष्ट अंतर नहीं पाया गया।

प्रस्तुत शोध का सांख्यिकी विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी संख्या 1

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि कामध्यमान, प्रमाप विचलन एवं कांतिक अनुपात

क्र. सं.	स्मूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	कांतिक अनुपात	सार्थकता
1	छात्र	50	70.44	12.61	0.378	असार्थक
2	छात्राएं	50	68.64	7.21		

सरणी संख्या 1 के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 70.44 तथा प्रमापविचलन 12.61 पाया गया। इसी प्रकार छात्राओं का मध्यमान 68.84 तथा प्रमाप विचलन 7.21 पाया गया। प्राप्त मध्यमानों एवं प्रमाप विचलन के आधार पर टी–मूल्य 0.378 प्राप्त हुआ जो 0.05 विश्वास स्तर के मूल्य 1.96 से कम है। अतः 0.05 विश्वास स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर असार्थक पाया गया।

सारणी संख्या 2

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं कांतिक अनुपात

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	कांतिक अनुपात	सार्थकता
1	छात्र	50	9.6	3.69	0.46	असार्थक
2	छात्राएं	50	13.96	7.71		

सारणी संख्या 2 के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के समायोजन का मध्यमान 9.06 तथा प्रमापविचलन 3.69 पाया गया। इसी प्रकार छात्राओं के समायोजन का मध्यमान 13.96 तथा प्रमाप विचलन 7.71 अंक पाया गया। प्राप्त मध्यमानों एवं प्रमापविचलन के आधार पर टी–मूल्य 0.46 प्राप्त हुआ जो 0.05 विश्वास स्तर के मूल्य 1.96 से कम है। अतः 0.05 विश्वास स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में अन्तर असार्थक पाया गया।

परिकल्पना से संबंधित निष्कर्ष

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। प्राप्त प्रदतों के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में असार्थक अन्तर पाया गया। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की गई।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। प्राप्त प्रदतों के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में असार्थक अन्तर पाया गया। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की गई।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पाठक, पी. ड़ी. (1980)''शिक्षा मनोविज्ञान", आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
2. अग्रवाल, राम नारायण (1984) "मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन व मूल्यांकन'', आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
3. कपिल, एच. के. (1984)''अनुसंधान विधियां'', आगरा, हर प्रसाद भार्गव।
4. अग्रवाल, वाई. पी. (1988)"स्टेटिस्टिकल मेथड्स कन्सेप्ट्स एप्लीकेशन एण्ड कम्प्यूटेशन", नई दिल्ली, स्टर्लिंग पब्लिशर प्राइवेट लिमिटेड।
5. करलिंगर, एफ. एन. (2007)''फाउन्डेसन ऑफ बिहेवियरल रिसर्च'', दिल्ली, सुरजीत पब्लिकेशन्स।
6. एन्सायक्लोपिडिया ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्च, वोल्यूम 1,2 व 3, लंदन, द फ्री प्रेस मेकमिलन पब्लिशर्स।